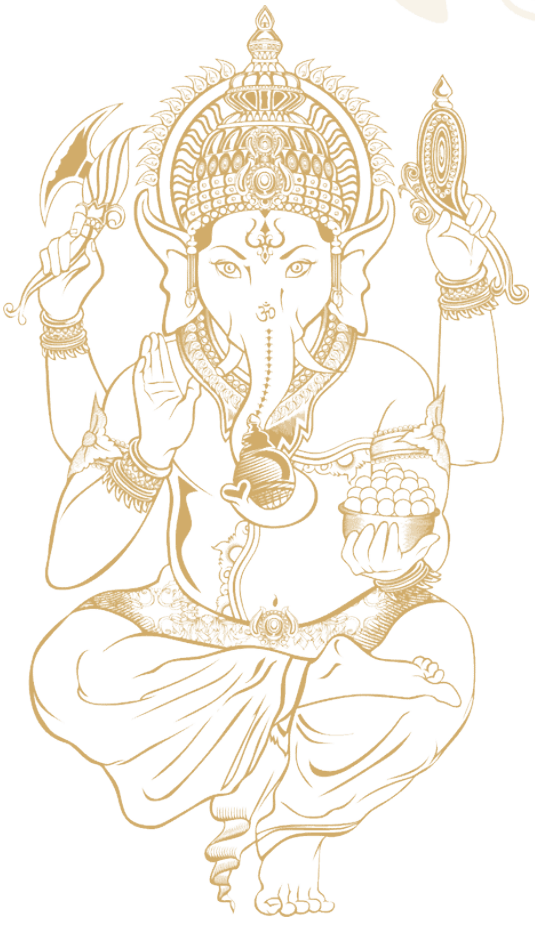

Sandeep

Priya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121242604

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/10/1993	जन्म तिथि	06/08/1998
शुक्र-शनिवार	दिन	गुरुवार
घंटे 03:25:00	जन्म समय	14:05:00 घंटे
घटी 54:00:03	जन्म समय(घटी)	21:43:45 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Chapra
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	25:47:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	84:47:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	00:09:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:48:58	सूर्योदय	05:19:24
17:41:54	सूर्यास्त	18:33:40
23:46:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:08

विंशोत्तरी बुध 3वर्ष 7मा 1दि सूर्य 04/05/2024 04/05/2030		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी सूर्य 5वर्ष 6मा 8दि राहु 12/02/2021 13/02/2039	
सूर्य	21/08/2024	11:59:22	सिंह	लग्न	वृश्चि	14:58:24	राहु	27/10/2023
चन्द्र	20/02/2025	14:57:17	कन्या	सूर्य	कर्क	19:51:28	गुरु	21/03/2026
मंगल	28/06/2025	27:11:10	मीन	चंद्र	धनु	27:43:41	शनि	25/01/2029
राहु	23/05/2026	09:29:10	तुला	मंगल	मिथु	26:46:53	बुध	14/08/2031
गुरु	11/03/2027	07:20:16	तुला	बुध व	सिंह	02:45:19	केतु	01/09/2032
शनि	21/02/2028	10:35:08	वृश्चि व	गुरु व	मीन	03:37:12	शुक्र	02/09/2035
बुध	27/12/2028	24:27:44	वृष व	शुक्र	मिथु	27:36:02	सूर्य	26/07/2036
केतु	04/05/2029	24:36:11	धनु	शनि	मेष	09:42:55	चन्द्र	25/01/2038
शुक्र	04/05/2030	29:55:30	तुला	राहु व	सिंह	07:40:33	मंगल	13/02/2039
				केतु व	कुंभ	07:40:33		
				हर्ष व	मक	16:48:32		
				नेप व	मक	06:34:28		
				प्लूटो व	वृश्चि	11:29:15		

लग्न-चलित

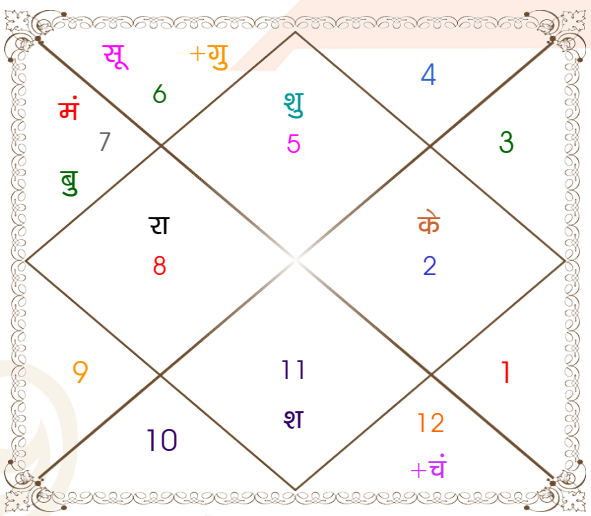

लग्न-चलित

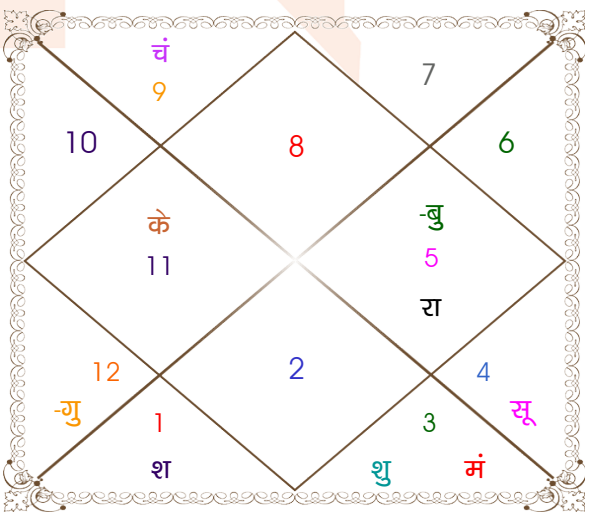

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	नकुल	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि ैंदकममच का नक्षत्र रेवती है।

ैंदकममच का वर्ग सिंह है तथा च्तपलं का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ैंदकममच और च्तपलं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

ैंदकममच मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

च्तपलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ैंदकममच कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ैंदकममच तथा च्तपलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।